FEELASTRO प्रस्तुत करता है

सम्पूर्ण वैदिक जन्मकुंडली

विस्तृत भावफल — प्रत्येक भाव का गहन विश्लेषण

जिनके लिए तैयार की गई

Ananya Sharma

जन्म 14 मई 1990 को 06:45 AM बजे · Kochi, Kerala, India

♉ वृषभ लग्न · चन्द्र धनु राशि में · पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र

☉ ☽ ♂ ☿ ♃ ♀ ♄ ☊ ♅

स्विस एफेमेरिस की खगोलीय शुद्धता से गणना · लाहिड़ी अयनांश · वैदिक निरयण राशिचक्र

इस रिपोर्ट में क्या है

♈ जन्म कुंडलियाँ एवं ग्रह
राशि एवं नवांश कुंडली, सटीक अंश, ग्रहों की स्थिति और उनका बल।

✦ आपकी कुंडली के योग
जन्म के समय बने सभी शास्त्रीय योग और उनके फल।

☸ भावफल — मुख्य आकर्षण
जीवन के बारहों भावों का गहन अध्ययन : शरीर, धन, परिवार, करियर, विवाह, भाग्य और बहुत कुछ।

☽ दशा क्रम एवं उपाय
विंशोत्तरी महादशाएँ, दोष, रत्न एवं इष्ट देवता।

विषय-सूची

जन्म विवरण एवं पंचांग 3
आपकी जन्म कुंडलियाँ 3
ग्रह स्थिति एवं ग्रह-अवस्था 3
नवग्रह परिचय 4
दृष्टि तालिका 5
आपकी कुंडली के योग 5
भावफल — बारह भावों का विश्लेषण 7
विंशोत्तरी दशा क्रम 12
वर्तमान गोचर 13
षोडशवर्ग कुंडलियाँ 14
ग्रह बल 15
अष्टकवर्ग 15
आरूढ पद एवं उपग्रह 16
अनुकूल कालखंड 16
दोष, रत्न एवं इष्ट देवता 17

01 जन्म विवरण एवं पंचांग — आपके आगमन का क्षण

इस खंड के विषय में: पंचांग वैदिक दिवस के पाँच अंगों — तिथि, नक्षत्र, योग, करण और वार — को आपके जन्म के सटीक क्षण पर अंकित करता है। इसी आधार पर इस रिपोर्ट की प्रत्येक गणना खड़ी है।

नाम	Ananya Sharma
जन्म तिथि एवं समय	14 मई 1990, 06:45 AM (Asia/Kolkata)
जन्म स्थान	Kochi, Kerala, India
लग्न	♉ वृषभ
चन्द्र राशि	♐ धनु
जन्म नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा — चरण 1
तिथि	चतुर्थी (कृष्ण पक्ष)
योग (पंचांग)	साध्य
करण	बालव

02 आपकी जन्म कुंडलियाँ — राशि (D1), नवांश (D9) एवं भाव चलित

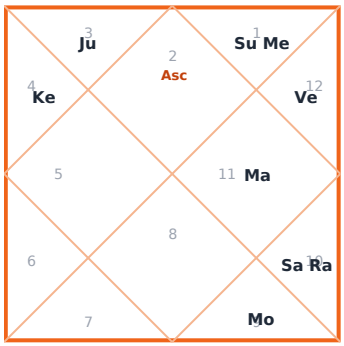

राशि कुंडली आपके जन्म-आकाश का चित्र है ; नवांश उसे सूक्ष्म करता है — यहाँ दिखा ग्रह-बल जीवन के साथ परिपक्व होता है। भाव चलित कुंडली भावों को भाव-मध्य से मापती है : आपकी कुंडली में **सूर्य द्वादश → प्रथम** — जहाँ कोई ग्रह भाव बदलता है, वहाँ भावफल खंड में भाव चलित टिप्पणी दी गई है।

03 ग्रह स्थिति एवं ग्रह-अवस्था

इस खंड के विषय में: प्रत्येक ग्रह की राशि, सटीक अंश, भाव और गरिमा। गरिमा बताती है कि ग्रह अपनी राशि में कितना सहज है — उच्च या स्वराशि ग्रह अपने फल सहजता से देता है, जबकि नीच या शत्रु-राशि ग्रह को कुंडली के अन्य स्रोतों से बल चाहिए।

	ग्रह	राशि	अंश	भाव	गरिमा
☉	सूर्य	♈ मेष	29°16'	12	उच्च
☽	चन्द्र	♐ धनु	15°45'	8	सम राशि
♂	मंगल	♒ कुंभ	23°32'	10	सम राशि
☿	बुध	♈ मेष	14°32'	12	सम राशि
♃	गुरु	♊ मिथुन	15°33'	2	शत्रु राशि
♀	शुक्र	♓ मीन	17°27'	11	उच्च
♄	शनि	♑ मकर	1°33'	9	स्वराशि
☊	राहु	♑ मकर	17°41'	9	मित्र राशि

☋	केतु	♋ कर्क	17°41'	3	मित्र राशि

04 नवग्रह परिचय — आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका

इस खंड के विषय में: नवों ग्रहों का पूर्ण परिचय-पत्र — आपके लग्न के लिए वह किन भावों का स्वामी है, उसका नक्षत्र, जैमिनी चर-कारक भूमिका (आत्मा, करियर, जीवनसाथी…), कार्यगत स्वभाव, बालादि अवस्था, तथा वर्गोत्तम, अस्त और वक्री जैसी विशेष स्थितियाँ। यही तय करते हैं कि ग्रह इस रिपोर्ट के वादों को कितनी निष्ठा से निभाएगा।

☉ सूर्य — ♈ मेष 29°16' · भाव 12

उच्च

स्वामित्व (भाव): 4
चर कारक: आत्मकारक — आत्मा का कारक
बालादि अवस्था: मृत अवस्था (अति क्षीण / निष्क्रिय) · जाग्रत
नक्षत्र: कृत्तिका — चरण 1
कार्यगत स्वभाव: सम
युति: बुध

☽ चन्द्र — ♐ धनु 15°45' · भाव 8

सम राशि

स्वामित्व (भाव): 3
चर कारक: मातृकारक — माता एवं सुख
बालादि अवस्था: युवा अवस्था (पूर्ण बल) · स्वप्न
नक्षत्र: पूर्वाषाढ़ा — चरण 1
कार्यगत स्वभाव: अशुभ
युति: कोई नहीं

♂ मंगल — ♒ कुंभ 23°32' · भाव 10

सम राशि

स्वामित्व (भाव): 7, 12
चर कारक: अमात्यकारक — करियर एवं मंत्रणा
बालादि अवस्था: वृद्ध अवस्था (क्षीण होता बल) · स्वप्न
नक्षत्र: पूर्वा भाद्रपद — चरण 2
कार्यगत स्वभाव: सम
युति: कोई नहीं

☿ बुध — ♈ मेष 14°32' · भाव 12

वक्री · सम राशि

स्वामित्व (भाव): 2, 5
चर कारक: पुत्रकारक — संतान एवं बुद्धि
बालादि अवस्था: युवा अवस्था (पूर्ण बल) · स्वप्न
नक्षत्र: भरणी — चरण 1
कार्यगत स्वभाव: शुभ
युति: सूर्य

♃ गुरु — ♊ मिथुन 15°33' · भाव 2

शत्रु राशि

स्वामित्व (भाव): 8, 11
चर कारक: पितृकारक — पिता एवं भाग्य
बालादि अवस्था: युवा अवस्था (पूर्ण बल) · सुषुप्ति
नक्षत्र: आर्द्रा — चरण 3
कार्यगत स्वभाव: अशुभ
युति: कोई नहीं

♀ शुक्र — ♓ मीन 17°27' · भाव 11

उच्च

स्वामित्व (भाव): 1, 6
चर कारक: भ्रातृकारक — भाई-बहन एवं पराक्रम
बालादि अवस्था: युवा अवस्था (पूर्ण बल) · जाग्रत
नक्षत्र: रेवती — चरण 1
कार्यगत स्वभाव: शुभ
युति: कोई नहीं

♄ शनि — ♑ मकर 1°33' · भाव 9

वर्गोत्तम · वक्री · स्वराशि

स्वामित्व (भाव): 9, 10
चर कारक: दाराकारक — जीवनसाथी एवं साझेदारी
बालादि अवस्था: मृत अवस्था (अति क्षीण / निष्क्रिय) · जाग्रत
नक्षत्र: उत्तराषाढ़ा — चरण 2
कार्यगत स्वभाव: योगकारक
युति: राहु

☊ राहु — ♑ मकर 17°41' · भाव 9

मित्र राशि

स्वामित्व (भाव): —
चर कारक: ज्ञातिकारक — स्वजन एवं प्रतिस्पर्धा
बालादि अवस्था: युवा अवस्था (पूर्ण बल) · स्वप्न
नक्षत्र: श्रवण — चरण 3
कार्यगत स्वभाव: लागू नहीं (छाया ग्रह)
युति: शनि

☋ केतु — ♋ कर्क 17°41' · भाव 3

मित्र राशि

स्वामित्व (भाव): —
चर कारक: —
बालादि अवस्था: युवा अवस्था (पूर्ण बल) · स्वप्न

नक्षत्र: आश्लेषा — चरण 1
कार्यगत स्वभाव: लागू नहीं (छाया ग्रह)
युति: कोई नहीं

05 दृष्टि तालिका — कौन किस पर दृष्टि रखता है

इस खंड के विषय में: वैदिक ज्योतिष में प्रत्येक ग्रह अपने से सातवीं राशि को देखता है ; मंगल अतिरिक्त रूप से चौथी और आठवीं, गुरु पाँचवीं और नौवीं, तथा शनि तीसरी और दसवीं दृष्टि रखता है। दृष्टि से ग्रह अपना स्वभाव उस पर डालता है जिस पर वह पड़ती है — प्रत्येक पंक्ति में देखें कि उस ग्रह की दृष्टि किन ग्रहों और भावों पर है।

दृष्टि →	☉	☽	♂	☿	♃	♀	♄	☊	☋	H1	H2	H3	H4	H5	H6	H7	H8	H9	H10	H11	H12
☉ सूर्य	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	●	·	·	·	·	·	·
☽ चन्द्र	·	·	·	·	●	·	·	·	·	·	●	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
♂ मंगल	·	·	·	·	·	·	·	·	·	●	·	·	●	●	·	·	·	·	·	·	·
☿ बुध	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	●	·	·	·	·	·	·
♃ गुरु	·	●	●	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	●	·	●	·	●	·	·
♀ शुक्र	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	●	·	·	·	·	·	·	·
♄ शनि	·	·	·	·	·	●	·	·	·	·	·	●	·	·	●	·	·	·	·	●	·
☊ राहु	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
☋ केतु	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·

नारंगी बिंदु : ग्रह-पर-ग्रह दृष्टि। हरे बिंदु : वे भाव जिन पर ग्रह की दृष्टि है।

06 आपकी कुंडली के योग — 13 शास्त्रीय योग पाए गए

इस खंड के विषय में: योग शास्त्रों में वर्णित विशेष ग्रह-संयोग हैं। प्रत्येक योग कुंडली के फल को प्रभावित करता है — राजयोग प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं, धनयोग समृद्धि देते हैं, और दोषकारक योग उन क्षेत्रों की ओर संकेत करते हैं जहाँ सजग प्रयास चाहिए। योग का वास्तविक बल उसके ग्रहों की गरिमा और दशाओं पर निर्भर है।

सुनफा योग चन्द्र योग

निर्माण : चन्द्रमा से द्वितीय भाव में ग्रह (शनि)

चंद्रमा से द्वितीय में ग्रह — स्व-अर्जित धन, बुद्धि और शांत स्वभाव।

अधि योग चन्द्र योग

निर्माण : चन्द्रमा से 6/7/8 भाव में शुभ ग्रह (गुरु)

चंद्रमा से 6, 7, 8वें भाव में शुभ ग्रह — नेतृत्व, समृद्धि और शत्रुओं पर विजय।

बुधादित्य योग युति
निर्माण : सूर्य-बुध युति
सूर्य-बुध की युति — प्रखर बुद्धि, प्रशासनिक क्षमता और यश।

श्रापित योग दोष
निर्माण : शनि (भाव 9) राहु (भाव 9) के साथ/सम्मुख
शनि-राहु संयोग — पूर्व-कर्म भार का संकेत ; धैर्य और उपाय से शमन।

राज योग (केंद्र–त्रिकोण) राज योग
निर्माण : भाव-4 के स्वामी सूर्य और भाव-5 के स्वामी बुध की युति
केंद्र-त्रिकोण स्वामियों का संबंध — शास्त्रीय राज योग ; पद और सफलता।

मृदंग योग राज योग
निर्माण : शनि केन्द्र/त्रिकोण में गरिमायुक्त, सबल लग्नेश के साथ
मृदंग-सा गूंजता यश — राजसी सुख और लोकप्रियता।

भारती योग कर्म योग
निर्माण : 2/5/11 के स्वामी का नवांश-स्वामी नवमेश से युत एवं उच्चस्थ
विद्या और वाणी का योग — शास्त्र-ज्ञान, यश और कलात्मक प्रतिभा।

धर्म-कर्माधिपति योग राज योग
निर्माण : नवमेश और दशमेश — परिवर्तन, सम्मुखता अथवा युति में
नवम-दशम स्वामियों का संबंध — श्रेष्ठ राज योग ; धर्म और कर्म का संगम।

विष्णु योग राज योग
निर्माण : नवमेश का नवांश-स्वामी नवमेश व दशमेश से युत
नवम-दशम और नवांश का संबंध — विष्णु-कृपा ; धन, यश और दीर्घ सुख।

स्ववीर्यधन योग धन योग
निर्माण : लग्नेश और द्वितीयेश की सुदृढ़ राशि-स्वामी शृंखला
स्व-पराक्रम से धन — आत्मबल से अर्जित संपत्ति।

श्रीनाथ योग राज योग
निर्माण : सप्तमेश दशम भाव में, दशमेश और नवमेश की युति के साथ
सप्तम-दशम स्वामियों का संबंध — श्रीनाथ-कृपा ; वैभव और दांपत्य-सुख।

भेरी योग राज योग
निर्माण : गुरु, शुक्र और लग्नेश परस्पर केन्द्रों में, सबल नवमेश के साथ
नगाड़े-सा घोषित वैभव — धन, कुटुंब-सुख, सदाचरण और दूर तक जाने वाला नाम।

संन्यास योग संन्यास योग
निर्माण : आरूढ़ लग्न से तृतीय/षष्ठ भाव अपीड़ित शुभ ग्रहों से रक्षित
संन्यास योग — वैराग्य, तप और आध्यात्मिक अधिकार का चिह्न।

इस रिपोर्ट का हृदय

भावफल — बारह भावों का विश्लेषण

बारहों भाव जीवन के एक-एक क्षेत्र के अधिपति हैं। नीचे प्रत्येक भाव को उसके स्वामी की स्थिति, उसमें बैठे व उस पर दृष्टि रखने वाले ग्रहों तथा बने शास्त्रीय संयोगों के आधार पर पढ़ा गया है — विशेष रूप से आपकी कुंडली के लिए।

प्रथम भाव स्व, शरीर एवं व्यक्तित्व ♉ वृषभ

इस भाव के स्वामी ♀ शुक्र आपके **एकादश** भाव में स्थित हैं। इस भाव में कोई ग्रह नहीं — फल भावेश के माध्यम से मिलेंगे।

चूंकि आपका लग्नेश एकादश भाव में स्थित है, जिसे **लाभ स्थान** कहा जाता है, आप अपने स्वयं के प्रयासों से धन कमाने में सफल होंगे। चूंकि एकादश भाव एक उपचय भाव है, आपको मध्यम आयु में सफलता दिखेगी, परंतु यह वृद्धि स्थिर रहेगी। आप आर्थिक रूप से मजबूत होंगे, और जब आप धन कमाने के बारे में सोचना शुरू करेंगे, तो अपने सपनों को साकार करने के लिए कठिन परिश्रम करेंगे। आप बहुत मिलनसार होंगे और आसानी से मित्र बनाएंगे। मित्रों और सामाजिक दायरे के साथ अधिक संलिप्तता आपके व्यक्तिगत/वैवाहिक जीवन को हानि पहुंचा सकती है। आपको अपने बड़े भाई-बहन से सहयोग और स्नेह प्राप्त होगा। आप व्यवसाय में बहुत सफल होंगे। चूंकि एकादश भाव **शत्रु के भाव का शत्रु** (छठे भाव से छठा भाव) है, आप गलत लोगों को अपनी शत्रु सूची में शामिल करने की भूल कर सकते हैं।

भाव चलित टिप्पणी — भावम् कुंडली में स्थिति परिवर्तन

भाव चलित चार्ट के अनुसार, सूर्य की स्थिति बदल जाती है ; समय बीतने के साथ आप भावम चार्ट के अनुसार परिणामों को अधिक प्रभावी ढंग से अनुभव कर सकते हैं। **भावम चार्ट परिणाम:** चूंकि सूर्य पहले भाव में है, आपकी दृष्टि आत्मविश्वास से भरी और आंखें प्रमुख होंगी, तथा आप अधिकारपूर्ण भूमिकाएं निभाने की ओर झुकाव रखेंगे। आपके पास किसी भी परिस्थिति को संभालने की स्वतंत्रता, ऊर्जा और उत्साह होगा। हालांकि, महत्वपूर्ण परिस्थितियों में आप अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाएंगे। आपको बालों के पतले होने की समस्या हो सकती है।

द्वितीय भाव धन, कुटुंब एवं वाणी ♊ मिथुन

इस भाव के स्वामी ☿ बुध आपके **द्वादश** भाव में स्थित हैं। इस भाव में **गुरु** विराजमान हैं।

दूसरा भाव **स्थिर संपत्ति, धन, परिवार, वाणी, चेहरे और गले** से संबंधित मामलों को दर्शाता है। चूंकि आपका द्वितीयेश बारहवें भाव में स्थित है, जो **मोक्ष, आध्यात्मिकता, गुप्त शत्रु, व्यय और हानि** का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए आप विदेशी स्रोतों से आय अर्जित करेंगे। आप अधिक खर्च करने की प्रवृत्ति रखते हैं और अपनी आय के प्रति बहुत सजग नहीं हो सकते हैं। आप बहुत आध्यात्मिक भी होंगे और आध्यात्मिकता से संबंधित ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस बात की संभावना है कि आप किसी विदेशी भूमि में निवास करेंगे। आप किसी दूरस्थ भूमि में धन और संपत्ति अर्जित कर सकते हैं। भले ही आपके पास सांसारिक सुख-सुविधाएं और विलासिता हो, फिर भी आप उन चीजों से बहुत प्रसन्न नहीं हो सकते हैं।

चूंकि बृहस्पति द्वितीय भाव में हैं, आप दानशील हैं और अपने परिवार के सदस्यों के लिए नि:स्वार्थ भाव से धन खर्च करने में कुशल हैं। आपकी आर्थिक स्थिति हमेशा उत्कृष्ट और सुरक्षित रहेगी। आप विद्वान होंगी, और आपकी वाणी धार्मिक और पवित्र होगी। आपको खाने का शौक हो सकता है और अपनी इच्छानुसार भोजन प्राप्त करने का सौभाग्य मिल सकता है।

तृतीय भाव पराक्रम, भाई-बहन एवं कौशल ♋ कर्क

इस भाव के स्वामी ☽ चन्द्र आपके **अष्टम** भाव में स्थित हैं। इस भाव में **केतु** विराजमान हैं।

तीसरा भाव **आत्मविश्वास, साहस, यात्रा, संचार, कला और संस्कृति, छोटे भाई-बहनों** आदि से संबंधित विषयों को दर्शाता है। चूंकि आपका तीसरा स्वामी आठवें भाव में स्थित है, जो **रहस्य, गूढ विद्या, अचानक होने वाली घटनाओं, दीर्घायु, गडे हुए खजाने** आदि का प्रतिनिधित्व करता है, आपकी रहस्यमय चीजों और कहानियों में रुचि होगी। आप इनसे संबंधित लेखक या ब्लॉगर हो सकते हैं। चूंकि तीसरा और आठवां दोनों भाव गपशप, रहस्य और गूढ़ता से संबंधित हैं, आपको आरोपों या गपशप का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए आपको अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बनाए रखने में सावधान रहने की आवश्यकता है। आप अपने जीवन को बहुत गोपनीय रख सकते हैं, और आपके करीबी लोगों को भी आपके कुछ शौक के बारे में पता नहीं हो सकता है। भले ही आप संबंध में वफादार और ईमानदार हैं, संचार के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। आपको उन परिस्थितियों में शामिल होने से बचना चाहिए जो आपसे संबंधित नहीं हैं। आप अपने भाई-बहनों से अलग हो सकते हैं।

चूँकि केतु तृतीय भाव में स्थित हैं, आपमें कई छुपी हुई प्रतिभाएँ और कौशल होंगे और आप रचनात्मक होंगे। आप अपने छोटे भाई-बहनों से मानसिक रूप से जुड़े होते हुए भी उनसे कुछ दूरी अनुभव कर सकते हैं। आप अपने ही कौशल के बल पर धनवान और सफल होंगे। आप सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक भी होंगे।

चतुर्थ भाव गृह, माता एवं सुख ♌ सिंह

इस भाव के स्वामी ☉ सूर्य आपके **द्वादश** भाव में स्थित हैं। इस भाव में कोई ग्रह नहीं — फल भावेश के माध्यम से मिलेंगे।

चतुर्थ भाव **माता, गृह, वाहन, सुख, शांति, सामान्य शिक्षा आदि** से संबंधित विषयों को दर्शाता है। चूंकि आपका चतुर्थ भाव स्वामी द्वादश भाव में स्थित है, जो **मोक्ष, आध्यात्मिकता, गुप्त शत्रु, व्यय और हानि** का प्रतिनिधित्व करता है, आप एक आध्यात्मिक व्यक्ति होंगे, क्योंकि चतुर्थ भाव और द्वादश भाव दोनों ही मोक्ष त्रिकोण भाव माने जाते हैं। आप अपनी माता के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हो सकते हैं और शिक्षा के लिए अपनी मातृभूमि से दूर किसी दूरस्थ स्थान पर रहना और यात्रा करना पड़ सकता है। आपको जीवन में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है और मानसिक तनाव का अनुभव हो सकता है। हालांकि, आप शांतिपूर्ण और अच्छी नींद का आनंद लेंगे। आप अपनी वास्तविक भावनाओं को छिपाने में कुशल हैं और दबाव में भी परेशानी नहीं दिखा सकते। अप्रत्याशित क्षणों में आप अपना धैर्य भी खो सकते हैं। आप एक शाश्वत खोजी व्यक्ति हो सकते हैं और व्यापार या धन कमाने वाली अन्य गतिविधियों में रुचि नहीं ले सकते। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए और वाहन चलाते समय सावधान रहना चाहिए।

भाव चलित टिप्पणी — भावम् कुंडली मे स्थिति परिवर्तन

चूंकि भाव चलित कुंडली के अनुसार आपका चतुर्थ भाव स्वामी लग्न में स्थित है, इसलिए आप भाव कुंडली के अनुसार भी परिणाम अनुभव कर सकते हैं। अधिकांश मामलों में, अधिक प्रमुख प्रभाव भाव कुंडली के अनुसार होंगे, जो सामान्यतः समय बीतने के साथ अनुभव किए जाते हैं। **भाव कुंडली परिणाम:** आप एक शांतिप्रिय और सुखी व्यक्ति होंगे। मोक्ष त्रिकोण भाव (चतुर्थ) के स्वामी का धर्म त्रिकोण भाव (लग्न) में बैठना सामान्यतः शुभ माना जाता है। आपका हृदय पवित्र होगा, आप धर्मपूर्ण जीवन जीएंगे और सही आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ेंगे। आप एक सुखद घरेलू वातावरण में जन्म लेंगे, अपनी माता से जुड़े रहेंगे, एक विद्वान व्यक्ति होंगे, और नई-नई बातें सीखने में रुचि रखेंगे। आपको संपत्तियों, वाहनों और घरों से भी लाभ होगा। आप श्रोताओं के सामने बोलते समय अधिक आत्मविश्वासी नहीं हो सकते और आपमें संवाद क्षमता की कुछ कमी हो सकती है। आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता और सुख पाएंगे और अपने सीखे हुए कौशल का अपने व्यावसायिक जीवन में भली-भांति उपयोग करेंगे।

पंचम भाव संतान, बुद्धि एवं सृजनशीलता ♍ कन्या

इस भाव के स्वामी ☿ बुध आपके **द्वादश** भाव में स्थित हैं। इस भाव में कोई ग्रह नहीं — फल भावेश के माध्यम से मिलेंगे।

पंचम भाव **संतान, अटकल (स्पेकुलेशन), उच्च शिक्षा, यश, अधिकार, प्रेम, बुद्धि आदि** से संबंधित विषयों को दर्शाता है। चूंकि आपका पंचमेश द्वादश भाव में स्थित है, जो **मोक्ष, आध्यात्मिकता, गुप्त शत्रु, सुख, व्यय और हानि** का प्रतिनिधित्व करता है। आप इस ब्रह्मांड के रहस्यों के पीछे की सच्चाई के खोजी होंगे। आप दूर देशों में अपनी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। आप अपनी संतान के प्रति अत्यधिक सतर्क और अधिक मांग करने वाले भी हो सकते हैं। आध्यात्मिकता और पारिवारिक जीवन के साथ वैराग्य का संतुलन बनाए रखना लाभदायक रहेगा। आपकी संतान अपनी इच्छानुसार जीवन न जी पाने के कारण बंधन का अनुभव कर सकती है, जिससे आप और आपकी संतान के बीच कुछ मनमुटाव हो सकता है। आपको गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए। अटकल के व्यवसाय और शेयर बाजार से दूर रहना ही सर्वोत्तम रहेगा। हालांकि, विदेशी भूमि में आप अटकल संबंधी व्यवसाय में अच्छा कर सकते हैं। आप एक अच्छे लेखक या शिक्षाविद् बन सकते हैं।

षष्ठ भाव स्वास्थ्य, सेवा एवं बाधाएँ ♎ तुला

इस भाव के स्वामी ♀ शुक्र आपके **एकादश** भाव में स्थित हैं। इस भाव में कोई ग्रह नहीं — फल भावेश के माध्यम से मिलेंगे।

छठा भाव **सेवा, बीमारी, ऋण, शत्रु, संबंधी, कृषि आदि** से संबंधित विषयों को दर्शाता है। चूंकि आपका छठे भाव का स्वामी एकादश भाव में स्थित है, जो **लाभ, आय, बड़े भाई-बहन और सामाजिक नेटवर्क** का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए आप अपनी इच्छाओं और सपनों के प्रति दृढ़ और अत्यधिक केंद्रित हैं। आप अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए योजना बनाने और क्रियान्वित करने में पर्याप्त चतुर और कुशल हैं। आप सांसारिक सुख-सुविधाओं की ओर झुकाव रखते हैं और इन चीजों पर अधिक खर्च कर सकते हैं। अपने परिवार के भीतर हो रहे अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा आपके जीवन में आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है। आप अपने लाभ के लिए शत्रुओं का सामना करने में चतुर, साहसी और साहसिक होंगे। आप अपने शत्रुओं और प्रतिस्पर्धाओं से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। चूंकि छठा और एकादश भाव उपचय भाव कहलाते हैं, इसलिए शक्ति और सकारात्मकता समय के साथ संचित होती रहेगी, और आप बाद में सकारात्मक परिणामों की आशा कर सकते हैं। आपका सामाजिक नेटवर्क अच्छी तरह से जुड़ा हुआ होगा ; हालांकि, आपको ईर्ष्यालु दृष्टि और छिपे हुए शत्रुओं से सावधान रहने की आवश्यकता है।

सप्तम भाव विवाह एवं साझेदारी ♏ वृश्चिक

इस भाव के स्वामी ♂ मंगल आपके **दशम** भाव में स्थित हैं। इस भाव में कोई ग्रह नहीं — फल भावेश के माध्यम से मिलेंगे।

सातवां भाव **विवाह, जीवनसाथी, साझेदारी, व्यवसाय, कामुकता, जोश और विदेश यात्रा** से संबंधित मामलों को दर्शाता है। चूंकि आपका 7वां भाव स्वामी 10वें भाव में स्थित है, जो **कर्म, पेशा, व्यक्तिगत विकास, प्रसिद्धि, पुरस्कार आदि** का प्रतिनिधित्व करता है, आपका पति एक स्वतंत्र व्यक्ति होगा जिसमें कर्तव्य और उत्तरदायित्व की भावना होगी। वे समर्पित और वफादार भी होंगे। संभावना है कि आप अपने पेशेवर जीवन के भीतर से ही अपना जीवनसाथी पा सकती हैं। आपका पति सामाजिक दायरे में भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और सम्मानित होगा। आप धर्मपरायण और आध्यात्मिक होंगी और परिवार व व्यावसायिक जीवन में सामाजिक मानदंडों और सिद्धांतों का पालन करेंगी। यह सलाह दी जाती है कि आप अपने पति के साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्थान बनाए रखें और परिवार व व्यावसायिक जीवन को न मिलाएं। आपका जीवनसाथी अपने काम से संबंधित बार-बार यात्रा कर सकता है और परिवार से दूर रह सकता है। अपने ससुराल वालों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने से परिवारिक जीवन में सामंजस्य आएगा। आपका भाग्य और धन विदेशी भूमि से आ सकता है, और आप दूर देश में भी नाम और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। यह ग्रह संयोजन धन उत्पन्न करता है ; आप वित्तीय रूप से स्थिर और सुदृढ़ रहेंगी। आपको सरकार या उच्च अधिकारियों से भी लाभ हो सकता है। यदि आप राजनीति में हैं, तो आप नाम और प्रसिद्धि प्राप्त कर सकती हैं।

अष्टम भाव आयु, गूढ़ता एवं परिवर्तन ♐ धनु

इस भाव के स्वामी ♃ गुरु आपके **द्वितीय** भाव में स्थित हैं। इस भाव में **चन्द्र** विराजमान हैं।

आठवाँ भाव **रहस्य, गूढ़ विद्या, अचानक घटित होने वाली घटनाएँ, दीर्घायु, गुप्त धन आदि** को दर्शाता है। चूँकि आपका आठवें भाव का स्वामी दूसरे भाव में स्थित है, जो **स्थायी संपत्ति, धन, परिवार, भोजन, चेहरा, आवाज़ और वाणी** को दर्शाता है, यदि आप एक अच्छे वित्तीय योजनाकार नहीं हैं तो आपको धन और संपत्ति में अचानक गिरावट देखने को मिल सकती है। दूसरे भाव में आठवें भाव का स्वामी एक मजबूत मारक (हत्यारा ग्रह) प्रभाव रखता है, इसलिए स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और शरीर के अस्वस्थ लक्षणों पर उचित चिकित्सा ध्यान देने की सलाह दी जाती है ; अन्यथा, आठवें भाव के स्वामी की दशा या अंतर्दशा अवधि जानलेवा भी हो सकती है। हालाँकि, यह ग्रह संयोजन आठवें भाव के स्वामी की आठवें भाव पर दृष्टि के कारण अचानक धन लाभ जैसी कुछ अच्छी बातें भी उत्पन्न करता है। आप स्वस्थ भोजन पद्धति का पालन नहीं कर सकते या अपने भोजन को पसंद नहीं कर सकते। विशेष रूप से मध्यम आयु में आपको आँखों की समस्या या दंत रोग हो सकते हैं, और आपको अपने विकृत दाँत ठीक करवाने पड़ सकते हैं। आपको वैवाहिक जीवन में अप्रत्याशित और अप्रिय घटनाओं का भी सामना करना पड़ सकता है। आप ऐसे स्रोतों से धनवान बन सकते हैं जो दूसरों को ज्ञात नहीं हैं, या संभावना है कि आप अपने आय के स्रोत मित्रों और रिश्तेदारों को नहीं बताएँगे।

चूँकि चंद्रमा अष्टम भाव में स्थित है, आपको अपने जीवनसाथी के माध्यम से अप्रत्याशित आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। आप अनजान विषयों को लेकर चिंता और भय का अनुभव कर सकते हैं। किसी भी प्रकार की व्यसन से दूर रहने की सलाह दी जाती है। सामान्यतः आपका वैवाहिक जीवन शांतिपूर्ण रहेगा, और आपका जीवनसाथी सहयोगी होगा, लेकिन कभी-कभी आपको वैवाहिक सुख की कमी का अनुभव हो सकता है। आपकी आयु दीर्घ होगी।

नवम भाव भाग्य, धर्म एवं पिता ♑ मकर

इस भाव के स्वामी ♄ शनि आपके **नवम** भाव में स्थित हैं। इस भाव में **शनि, राहु** विराजमान हैं।

नवम भाव **पिता, गुरु, विदेश यात्रा, भाग्य, उच्च ज्ञान, धर्म, ईश्वर आदि** से संबंधित विषयों को दर्शाता है। चूँकि आपका नवमेश अपने ही भाव में स्थित है, इसलिए आप सामान्यत: अत्यंत भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता दीर्घायु और प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। आपकी सफलता आपके स्वयं के प्रयासों और दृढ़ संकल्प से प्राप्त होगी। आप स्वयं के बलबूते उच्च बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होंगे। चूँकि नवमेश तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है, इसलिए आपके छोटे भाई-बहनों के साथ आपके सौहार्दपूर्ण संबंध रहेंगे। वे भाग्यशाली और समृद्ध होंगे। यह ग्रह संयोजन अत्यंत शुभ माना जाता है, जो व्यक्ति को अत्यंत धनवान और सफल बनाता है, और आप धर्मपूर्ण जीवनशैली के माध्यम से इसके सकारात्मक परिणामों का लाभ उठा सकेंगे। आपकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति शुद्ध और सशक्त होगी, जो आपकी सफलता की प्रेरक शक्ति बनेगी। आप सामाजिक जीवन में एक द्वैधता बनाए रख सकते हैं, जिससे आपके नेटवर्क में भ्रम उत्पन्न हो सकता है। हालाँकि, आपकी सार्वजनिक छवि ऊँची और अच्छी बनी रहेगी। आप विदेशी संबंधों या विदेशों के माध्यम से धनवान बन सकते हैं। आपका व्यक्तित्व भी सुखद और आपकी संवाद-क्षमता प्रभावशाली होगी। आप किसी भी पुण्य कार्य को करने का साहस रखेंगे और दूसरों तथा उच्च अधिकारियों का समर्थन एवं प्रशंसा प्राप्त करेंगे।

चूँकि राहु नवम भाव में स्थित है, इसलिए आपकी धार्मिक मान्यताएँ और संबंधित जीवनशैली दूसरों से भिन्न होंगी। आप जो उपदेश देते हैं या कहते हैं, हो सकता है कि आप स्वयं उसका पालन न करें। आपका जीवनसाथी रिश्तों में मांग करने वाला हो सकता है। आपको पैतृक संपत्ति को लेकर परेशानी या अपने पिता के साथ गलतफहमियाँ भी हो सकती हैं। आप विदेश यात्राएँ करेंगे। आप धन-केंद्रित सोच वाले हैं और उसके लिए कड़ी मेहनत करेंगे।

चूंकि शनि नवम भाव में है, आप आध्यात्मिक कर्म में विश्वास रखते हैं परंतु दूसरों को आध्यात्मिक नहीं लग सकते। आप अपने तरीकों में धार्मिक और पारंपरिक रहेंगे, और कभी-कभी आप एक सख्त माता-पिता हो सकते हैं। आप अपने कार्यों में धर्मनिष्ठ हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे। आप विदेश यात्रा कर सकते हैं और वहां भाग्य व धन अर्जित कर सकते हैं। हालांकि, जीवन में बाधाएं आ सकती हैं जिन्हें आप अपनी अनुशासित मानसिकता और दृढ़ संकल्प से पार करने में सक्षम होंगे।

दशम भाव कर्म, व्यवसाय एवं प्रतिष्ठा ♒ कुंभ

इस भाव के स्वामी ♄ शनि आपके **नवम** भाव में स्थित हैं। इस भाव में **मंगल** विराजमान हैं।

दशम भाव **कर्म, वृत्ति, व्यक्तिगत विकास, यश, पुरस्कार आदि** का सूचक है। चूंकि आपका दशमेश नवम भाव में स्थित है, जो **पिता, गुरु, विदेश यात्रा, भाग्य, उच्च ज्ञान, धर्म, ईश्वर आदि** का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए आप अपने वृत्ति और व्यावसायिक जीवन में स्वाभाविक रूप से भाग्यशाली रहेंगे। आप किसी पेशेवर रूप से सुस्थापित परिवार में या किसी स्थापित व्यवसाय वाले परिवार में जन्म ले सकते हैं। आप धर्मपरायणता और सत्यनिष्ठा की ओर झुके रहेंगे, जो व्यवसाय चलाने या पेशेवर भूमिका निभाने में आपका उद्देश्य होगा। आप धनवान होंगे, आपकी आर्थिक स्थिति मज़बूत और सुदृढ़ रहेगी, और आप दान-पुण्य में उदार रहेंगे। शक्तिशाली केंद्र भाव (दशम भाव) और त्रिकोण भाव (नवम भाव) के बीच का यह संबंध सामान्यत: राजयोग माना जाता है और भाग्य, दिव्य कृपा, समृद्धि तथा ज्ञान के लिए अत्यंत शुभ है। समय के साथ आपकी सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, और आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा, नाम व यश अच्छा रहेगा। आप व्यवसाय, वृत्ति या उच्च शिक्षा के लिए विदेश यात्रा कर सकते हैं। आप अपने सभी कार्यों में पिता से अच्छे समर्थन की आशा कर सकते हैं। आप धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों में जानकार होंगे, परन्तु अधिक रूढ़िवादी नहीं होंगे। आप नए युग और समय के अनुसार सामाजिक परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहेंगे।

चूँकि मंगल दशम भाव में है, इसलिए एक शक्तिशाली योग बनता है जिसे **कुलदीपक** (परिवार का सितारा) कहा जाता है, जो आपको परिवार में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाता है, जो दूसरों के लिए नाम और यश लाता है। आप अत्यंत महत्वाकांक्षी, आशावादी और दृढ़ संकल्पी होंगे, और यह बाद के वर्षों में आपको प्रमुखता और समृद्धि की ओर बढ़ने में सहायता करेगा। अन्य लोग आपके नेतृत्व और संगठन कौशल की प्रशंसा करेंगे।

एकादश भाव लाभ, आय एवं आकांक्षाएँ ♓ मीन

इस भाव के स्वामी ♃ गुरु आपके **द्वितीय** भाव में स्थित हैं। इस भाव में **शुक्र** विराजमान हैं।

एकादश भाव **लाभ, आय, बड़े भाई-बहन, सामाजिक नेटवर्क आदि** को दर्शाता है। चूँकि आपका एकादशेश द्वितीय भाव में स्थित है, जो **स्थिर संपत्ति, धन, परिवार, भोजन, चेहरा, वाणी और भाषा** का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए आप हर तरह की विलासिता का आनंद लेंगे। इस ग्रह संयोजन को धन योग या धन संचय का ग्रह योग माना जाता है। आपके पास आय के कई स्रोत होंगे और आप विलासितापूर्ण वाहनों, सुंदर घरों और आंतरिक साज-सज्जा में रुचि रखेंगे। आपकी वाणी और स्वर आपके शारीरिक व्यक्तित्व की तरह आकर्षक होंगे। आपका रूप-रंग आपके सामाजिक जीवन में एक सकारात्मक बिंदु होगा। आपका अपने बड़े भाई-बहन के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रहेगा। आपका सामाजिक नेटवर्क और मित्र आपके व्यावसायिक जीवन या व्यवसाय का हिस्सा बन सकते हैं। आपके नेटवर्क और संबंधों के साथ बनाई गई साझेदारियाँ आपके लिए फलदायी होंगी। आप समाज में दयालु और दानशील होंगे, और यह सलाह दी जाती है कि अत्यधिक अभिमानी या लोभी न बनें, क्योंकि इससे आपके भाग्य को नुकसान पहुँच सकता है। आप किसी एक ही आय स्रोत से नहीं चिपके रहेंगे, इसलिए आप नए उपक्रम आजमाने में रुचि रखेंगे। चूँकि आपके पास अपने विचारों में साहस और आत्मविश्वास है, इसलिए आप अपने कार्यों में सफल होंगे। विवाह के बाद आप भाग्यशाली होंगे। चूँकि यह ग्रह संयोजन स्वास्थ्य समस्याओं और संबंधों में समस्याओं के प्रति भी चेतावनी देता है, इसलिए एक अच्छी और स्वस्थ जीवनशैली तथा पारिवारिक जीवन बनाए रखने की सलाह दी जाती है।

आपकी कुंडली में लग्नेश गुरु लाभ और आय के 11वें भाव में **उच्च का** है

शुक्र 11वें भाव में होने के कारण, आप कामुक स्वभाव के होंगे और अपने जीवनसाथी को खुश रखने में सक्षम होंगे। आपका वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा। आपका जीवनसाथी आर्थिक रूप से सक्षम होगा, या आपको अपने जीवनसाथी के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा। आप सुख-सुविधाओं और सामाजिक जीवन की इच्छा रखते हैं। आप अपनी संतान से भी सुखी रहेंगे।

द्वादश भाव व्यय, विदेश एवं मोक्ष ♈ मेष

इस भाव के स्वामी ♂ मंगल आपके **दशम** भाव में स्थित हैं। इस भाव में **सूर्य, बुध** विराजमान हैं।

बारहवाँ भाव **मोक्ष, आध्यात्मिकता, गुप्त शत्रु, सुख, व्यय, हानि आदि** को दर्शाता है। चूँकि आपके 12वें भाव का स्वामी 10वें भाव में स्थित है, जो **कर्म, पेशा, व्यक्तिगत विकास, प्रसिद्धि, पुरस्कार आदि** का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए आप अपने सामाजिक दायरे, मित्रों या उच्च अधिकारियों को प्रसन्न करने में उच्च व्यय का अनुभव कर सकते हैं। आपको अपने पेशे या करियर को स्थिर करने में भी कठिनाई हो सकती है। आप स्वयं को धर्मी, उदार और विनम्र के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं; हालाँकि, इसे प्राप्त करने के लिए आपको अपने भाग्य, समय और संपत्ति के एक हिस्से का त्याग करना पड़ सकता है। पैतृक संपत्ति या धन प्राप्त करने में आप बहुत भाग्यशाली नहीं हो सकते। यह ग्रह संयोजन खदान क्षेत्र, तेल रिग, अस्पताल, उच्च सुरक्षा वाले कार्यस्थलों और जेलों जैसे एकांत वातावरण में काम करने वाले लोगों के लिए उपयुक्त है। आपके अपनी संतान के साथ मतभेद हो सकते हैं।

बुध 12वें भाव में होने के कारण, आप दर्शन, अध्यात्म या ज्योतिष में बौद्धिक रुचि रखेंगे। आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है, जो आपके करियर की उन्नति में बाधा डाल सकती है। लंबी दूरी की यात्राओं में आप सामान्यतः भाग्यशाली रहेंगे। आपके कुछ छिपे शत्रु हो सकते हैं जो आपको अलग-अलग तरीकों से निराश करने का प्रयास करेंगे।

चूंकि सूर्य 12वें भाव में है, आप कुछ पीड़ा और संघर्षों के बाद आध्यात्मिकता का अनुभव करेंगे। आप अपने संघर्षों और अनुभवों से सीखने और उनसे भाग्य बनाने में सक्षम हैं। आपको संतान के मामले में कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और अपने पिता से विरासत या कृपा प्राप्त करने में भाग्यशाली नहीं हो सकते।

07 विंशोत्तरी दशा क्रम — आपके जीवन-अध्यायों की समय-रेखा

इस खंड के विषय में: विंशोत्तरी चक्र जीवन को ग्रह-अध्यायों (महादशाओं) में बाँटता है। प्रत्येक कालखंड का स्वामी ग्रह उन वर्षों की घटनाओं को अपनी कुंडलीगत भूमिका के अनुसार रंग देता है।

	महादशा स्वामी	आरंभ	समाप्ति
♀	शुक्र	14 मई 1990	25 सित. 2006
☉	सूर्य	25 सित. 2006	25 सित. 2012
☽	चन्द्र	25 सित. 2012	26 सित. 2022
♂	मंगल वर्तमान	26 सित. 2022	26 सित. 2029
☊	राहु	26 सित. 2029	27 सित. 2047
♃	गुरु	27 सित. 2047	27 सित. 2063
♄	शनि	27 सित. 2063	27 सित. 2082
☿	बुध	27 सित. 2082	27 सित. 2099
☋	केतु	27 सित. 2099	28 सित. 2106

अन्तर्दशा क्रम — मंगल महादशा का विस्तृत विवरण

अन्तर्दशा स्वामी	आरंभ	समाप्ति
♂ मंगल	26 सित. 2022	22 फ़र. 2023
☊ राहु	22 फ़र. 2023	12 मार्च 2024
♃ गुरु	12 मार्च 2024	16 फ़र. 2025
♄ शनि	16 फ़र. 2025	28 मार्च 2026
☿ बुध वर्तमान	28 मार्च 2026	25 मार्च 2027
☋ केतु	25 मार्च 2027	21 अग. 2027
♀ शुक्र	21 अग. 2027	20 अक्टू. 2028
☉ सूर्य	20 अक्टू. 2028	25 फ़र. 2029
☽ चन्द्र	25 फ़र. 2029	26 सित. 2029

आपकी वर्तमान महादशा — ♂ मंगल

मंगल क्रिया का ग्रह है। यह ग्रह भाई-बहनों, शारीरिक गतिविधि, चिकित्सा पेशे (शल्य चिकित्सा), सेना और पुलिस, तथा सेवा क्षेत्र के व्यवसाय का कारक या संकेतक है। मंगल को व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण ग्रह माना जाता है क्योंकि यह जीवन जीने के लिए आवश्यक शारीरिक ऊर्जा प्रदान करता है। महादशा के दौरान, आप अपने करियर और व्यावसायिक जीवन में वृद्धि का अनुभव करेंगे, आप नई परियोजनाओं को अपनाने में सक्रिय रहेंगे और अपने सौंपे गए कार्य को समय पर पूरा करने में भी सक्षम होंगे। धन स्थिर रहेगा और आर्थिक स्थिति बहुत संतोषजनक होगी। आप अपने शत्रुओं पर आसानी से विजय प्राप्त करेंगे और अपनी सफलता के मार्ग में आने वाली किसी भी बाधा को तोड़ने में सक्षम होंगे। यदि आप विवाहित हैं, तो आपकी अपने पति के साथ बहस या झगड़ा हो सकता है। यह सलाह दी जाती है कि वैवाहिक जीवन में सामंजस्य बनाए रखें अन्यथा यह पारिवारिक जीवन में अपूरणीय क्षति का कारण बन सकता है।

जिन लोगों का जन्म नक्षत्र **मृगशिरा, चित्रा** या **धनिष्ठा** होता है, उनकी जन्म से ही मंगल महादशा प्रारंभ होती है। इन जातकों को सामान्यत: मंगल की अंतर्दशा अवधियों के दौरान सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं।

जिन लोगों का जन्म लग्न राशि **मेष, कर्क** (मंगल योगकारक है), **सिंह** (मंगल योगकारक है), **धनु** या **मीन** है, उनकी जन्म कुंडली में मंगल एक कार्यात्मक शुभ ग्रह होता है, अत: यदि यह ग्रह अन्य किसी प्रकार से पीड़ित न हो तो इन लोगों को इसके सकारात्मक परिणाम सबसे अधिक प्राप्त होंगे।

मंगल एक स्वाभाविक अशुभ ग्रह है, इसलिए इस दशा के चरण के दौरान कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलेंगे। आपके भाई-बहनों के साथ कुछ विवाद हो सकते हैं, भूमि और संपत्ति से संबंधित कुछ समस्याएँ भी संभव हैं। लापरवाही के कारण दुर्घटनाएँ और आग या आग्नेयास्त्रों से खतरा भी इस दौरान देखा जाता है। जल्दबाजी में या बिना सोचे-समझे लिए गए निर्णय आपको मुसीबत में डाल सकते हैं। आप शारीरिक रूप से थका हुआ या कमजोर भी महसूस कर सकते हैं। चिकित्सकीय ध्यान देने की आवश्यकता पड़ सकती है और आपको बिना देरी किए सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। आपको अपने रिश्तों में वफादार रहना चाहिए और ऐसे अवांछित बाहरी आकर्षणों से बचना चाहिए जो आपके निजी जीवन को अस्थिर कर सकते हैं।

वर्तमान अन्तर्दशा — मंगल महादशा में बुध

यद्यपि मंगल और बुध के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध नहीं हैं, फिर भी यह अंतर्दशा नकारात्मक परिणाम नहीं दिखाएगी। यह अंतर्दशा काल मिश्रित परिणामों के साथ एक संतुलित समय होगा। आप अपने करियर में अधिक सक्रिय महसूस करेंगे और अपने कार्यों को सहजता से पूरा कर पाएंगे। इस दौरान आप अधिक आध्यात्मिक बन सकते हैं। कभी-कभी आप स्वयं को थका हुआ महसूस कर सकते हैं। मंगल और बुध दोनों ही थोड़े अशांत स्वभाव के हैं, इसलिए इस समय आप कुछ अधीरता दिखा सकते हैं। दूसरों के प्रति आपका रुख बदलता रह सकता है और कभी-कभी आप कड़वाहट भी दिखा सकते हैं। जुए और जोखिम भरे व्यवसायों से दूर रहें।

08 वर्तमान गोचर — 12 अग. 2026 की स्थिति

इस खंड के विषय में: मंद गति के ग्रह आपकी जन्म-चन्द्र राशि से गिने गए भावों से गुजरते हुए लंबे कालखंडों को प्रभावित करते हैं। ये स्थितियाँ रिपोर्ट बनने की तिथि के लिए गणित हैं।

♃ गुरु का गोचर — चन्द्रमा से अष्टम भाव में सावधानी आवश्यक

बृहस्पति, अष्टम भाव में गोचर करते हुए, कुछ हद तक हानिकारक हो जाएगा, और कुछ लोगों के लिए यह गोचर कड़वा भी हो सकता है। आप एक ही स्थान पर अटके हुए या जीवन में शून्य प्रगति महसूस कर सकते हैं। आपका खर्च बढ़ सकता है, और संभावना है कि आप अपनी मौजूदा मूल्यवान संपत्तियों पर धन खर्च करें। आप उदास और मानसिक रूप से थका हुआ भी महसूस कर सकते हैं। इस दौरान आपको धैर्यवान बने रहने और केंद्रित तथा सकारात्मक बने रहने की आवश्यकता है। अपने आहार और स्वास्थ्य का अच्छी तरह से ध्यान रखें।

♄ शनि का गोचर — चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में सावधानी आवश्यक

जब शनि आपकी जन्म राशि के चंद्रमा से चतुर्थ भाव में गोचर करता है, तब आप शनि की ढैय्या या कंटक शनि में प्रवेश करते हैं। इस अवधि के दौरान, आपको अधिक आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होगी। इस चरण के दौरान कोई अज्ञात भय या मानसिक बेचैनी आपको परेशान कर सकती है। इस समय यात्रा या स्थानांतरण की भी संभावना है। आपको घरेलू सद्भाव बनाए रखने का भी प्रयास करना चाहिए क्योंकि परिवार के सदस्यों के बीच कभी-कभी टकराव उत्पन्न हो सकता है।

☉ सूर्य का गोचर — चन्द्रमा से अष्टम भाव में सावधानी आवश्यक

सूर्य का अष्टम भाव में गोचर अनुकूल नहीं है। आप कम आत्मविश्वास महसूस कर सकते हैं, और अज्ञात भय आपको घेर सकता है। आप नई चुनौतियों और परियोजनाओं को अपनाने में असमर्थ हो सकते हैं। आपके आहार और खान-पान की आदतें बिगड़ सकती हैं और इससे संबंधित स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इस अवधि के दौरान वैवाहिक सामंजस्य बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है।

09 षोडशवर्ग कुंडलियाँ — सोलह वर्गों के सूक्ष्मदर्शी

इस खंड के विषय में: प्रत्येक वर्ग-कुंडली जीवन के एक विभाग को बड़ा करके दिखाती है — D9 विवाह और आंतरिक बल, D10 करियर, D7 संतान, D12 माता-पिता, इत्यादि। अनेक वर्गों में शुभ स्थित ग्रह स्थायी फल देता है। D1 और D9 में एक ही राशि में स्थित ग्रह वर्गोत्तम कहलाता है — उसके फल विशेष दृढ़ता पाते हैं।

वर्गोत्तम ग्रह : **शनि** — D1 और D9 में समान राशि ; इनके फल जीवन भर विशेष दृढ़ रहते हैं।

10 ग्रह बल — षड्बल, इष्ट/कष्ट, वैशेषिकांश, भाव बल

इस खंड के विषय में: षड्बल छह शास्त्रीय बल-स्रोतों (स्थान, दिग्, काल, चेष्टा, नैसर्गिक, दृग्) का योग है। 1.0 का अनुपात अर्थात् ग्रह अपने अपेक्षित बल पर है — इससे ऊपर वह अपने फल सचमुच दे पाता है, नीचे रहने पर शुभ स्थिति में भी अपेक्षा से कम फल देता है। इष्ट/कष्ट फल बताता है कि उस बल का कितना अंश आपके पक्ष में और कितना विपक्ष में कार्य करता है।

बल (विरूप)	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्थान बल	211.1	115.5	254.0	128.0	207.3	206.8	208.7
दिग् बल	33.1	17.6	55.0	52.0	47.7	12.9	42.4
काल बल	152.9	238.2	97.9	182.9	195.8	112.0	99.9
चेष्टा बल	46.9	44.5	27.5	46.6	16.7	32.0	40.1
नैसर्गिक बल	60.0	51.4	17.1	25.7	34.3	42.9	8.6
दृक् बल	-15.6	1.4	4.8	-19.8	-29.4	-26.5	2.4
कुल (विरूप)	**488.4**	**468.7**	**456.4**	**415.4**	**472.3**	**380.1**	**402.0**
बल अनुपात (1.0 = अपेक्षित)	**1.63**	**1.30**	**1.52**	**0.99**	**1.21**	**1.15**	**1.34**

इष्ट / कष्ट फल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट (शुभ फल)	50.1	25.2	37.7	21.4	29.9	42.6	38.1
कष्ट (अशुभ फल)	9.2	26.6	16.6	25.9	16.8	9.5	21.8
निवल	**40.9**	**-1.4**	**21.0**	**-4.5**	**13.1**	**33.2**	**16.3**

वैशेषिकांश (अंश बल)

यह गिनती है कि कितने वर्गों में ग्रह स्वराशि या उच्च में है — 2 = पारिजातांश, 3 = उत्तमांश, 4 = गोपुरांश, और आगे उच्चतर श्रेणियाँ ; गिनती जितनी अधिक, ग्रह के फल उतने विशिष्ट।

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गणना / श्रेणी	1	3 · उत्तमांश	2 · पारिजातांश	2 · पारिजातांश	3 · उत्तमांश	2 · पारिजातांश	4 · गोपुरांश

भाव बल

भाव में स्थित ग्रह, दृष्टियाँ, स्वामित्व, स्थिति और अष्टकवर्ग बिंदुओं से बना समग्र अंक — बलवान भाव अपने जीवन-क्षेत्र के फल सहजता से देते हैं।

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंक	**27.2**	**21.6**	**2.6**	**17.0**	**24.0**	**6.6**	**30.6**	**15.8**	**13.2**	**26.0**	**25.4**	**-4.4**

11 अष्टकवर्ग — राशियों में शुभ बिंदु

इस खंड के विषय में: अष्टकवर्ग प्रत्येक राशि को सातों ग्रहों और लग्न के दिए शुभ बिंदुओं से अंकित करता है। सर्व (संयुक्त) पंक्ति में 28 से अधिक अंक वाली राशियाँ गोचर में वृद्धिदायक होती हैं; 25 से कम वाली धैर्य माँगती हैं। प्रति-ग्रह (भिन्न) पंक्तियाँ उस ग्रह के अपने गोचर के लिए इसे सूक्ष्म करती हैं।

राशि →	♈ मेष	♉ वृष	♊ मिथ	♋ कर्	♌ सिं	♍ कन्	♎ तुल	♏ वृश	♐ धनु	♑ मकर	♒ कुं	♓ मीन
सर्व (कुल)	**30**	**29**	**22**	**25**	**25**	**26**	**27**	**34**	**30**	**29**	**35**	**25**
☉ सूर्य	4	4	1	3	4	5	5	5	4	4	7	2
☽ चन्द्र	4	3	7	5	2	4	3	6	5	4	3	3

♂ मंगल	3	3	2	2	5	4	3	4	2	3	6	2
☿ बुध	4	5	2	4	4	6	4	5	4	5	5	6
♃ गुरु	5	5	5	5	6	3	3	4	7	5	4	4
♀ शुक्र	6	4	3	3	3	3	6	4	5	4	5	6
♄ शनि	4	5	2	3	1	1	3	6	3	4	5	2

12 आरूढ पद एवं उपग्रह

इस खंड के विषय में: आरूढ़ पद दिखाते हैं कि प्रत्येक भाव का विषय संसार को कैसा दिखता है — आरूढ़ लग्न (A1) आपकी सार्वजनिक छवि है, दारापद (A7) आपके संबंधों की छवि, उपपद (A12) विवाह का दृश्य रूप। उपग्रह सूर्य से उत्पन्न छाया-बिंदु हैं; इनकी स्थितियाँ सूक्ष्म कार्मिक दबाव-क्षेत्र दर्शाती हैं।

आरूढ	राशि
आरूढ़ लग्न — सार्वजनिक छवि	♑ मकर
धनपद — दृश्य धन	♒ कुंभ
भ्रातृपद — भाई-बहन	♉ वृषभ
मातृपद — गृह एवं माता	♐ धनु
पुत्रपद — संतान एवं मन	♏ वृश्चिक
रोगपद — कलह एवं स्वास्थ्य	♌ सिंह
दारापद — साझेदारी	♒ कुंभ
मृत्युपद — गूढ़ विषय	♍ कन्या
भाग्यपद — भाग्य एवं श्रद्धा	♎ तुला
राज्यपद — करियर छवि	♐ धनु
लाभपद — लाभ	♊ मिथुन
उपपद — विवाह	♐ धनु

उपग्रह	राशि	अंश
धूम	कन्या	12°36'
व्यतीपात	तुला	17°24'
परिवेष	मेष	17°24'
इन्द्रचाप	मीन	12°36'
उपकेतु	मीन	29°16'

13 अनुकूल कालखंड — करियर · विवाह · व्यवसाय

इस खंड के विषय में: ये कालखंड प्रत्येक महादशा/अन्तर्दशा युग्म को उस जीवन-क्षेत्र के भावों और कारकों से मिलाकर अंकित किए गए हैं — जिन अवधियों में सक्रिय स्वामी सहायक भावों के अधिपति या निवासी हों, वे ऊँचे अंक पाती हैं। इनसे कार्यों का समय चुनें; उनका परिमाण शेष कुंडली बताती है।

करियर

अवधि	दशा	मूल्यांकन	यह अवधि क्यों
अग. 2009 – जुल. 2010	सूर्य / शनि	शुभ · 74	अन्तर्दशा : भाव-10 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 के स्वामी ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 में ग्रह
दिस. 2016 – जुल. 2018	चन्द्र / शनि	शुभ · 68	अन्तर्दशा : भाव-10 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 के स्वामी ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 में ग्रह
सित. 2022 – फ़र. 2023	मंगल / मंगल	शुभ · 56	महादशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय ; अन्तर्दशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय ; महादशा व अन्तर्दशा दोनों प्रमुख भावों को सक्रिय करती हैं
मार्च 2024 – फ़र. 2025	मंगल / गुरु	शुभ · 48	महादशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-2 में ग्रह ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-11 के स्वामी
फ़र. 2025 – मार्च 2026	मंगल / शनि	उत्तम · 100	अन्तर्दशा : भाव-10 के स्वामी सक्रिय ; महादशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 के स्वामी

नव. 2034 – सित. 2037	राहु / शनि	शुभ · 74	अन्तर्दशा : भाव-10 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 के स्वामी ; महादशा : सहायक भाव-9 में ग्रह
सित. 2047 – नव. 2049	गुरु / गुरु	शुभ · 52	महादशा : सहायक भाव-2 में ग्रह ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-2 में ग्रह ; महादशा : सहायक भाव-11 के स्वामी
नव. 2049 – मई 2052	गुरु / शनि	उत्तम · 90	अन्तर्दशा : भाव-10 के स्वामी सक्रिय ; महादशा : सहायक भाव-2 में ग्रह ; महादशा : सहायक भाव-11 के स्वामी

विवाह

अवधि	दशा	मूल्यांकन	यह अवधि क्यों
जुल. 2007 – नव. 2007	सूर्य / मंगल	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय
जुल. 2013 – फ़र. 2014	चन्द्र / मंगल	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय
सित. 2022 – फ़र. 2023	मंगल / मंगल	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय
फ़र. 2023 – मार्च 2024	मंगल / राहु	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय
मार्च 2024 – फ़र. 2025	मंगल / गुरु	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय
फ़र. 2025 – मार्च 2026	मंगल / शनि	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय
मार्च 2026 – मार्च 2027	मंगल / बुध	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय
मार्च 2027 – अग. 2027	मंगल / केतु	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय
अग. 2027 – अक्टू. 2028	मंगल / शुक्र	उत्तम · 90	सप्तमेश + शुक्र संयोग
अक्टू. 2028 – फ़र. 2029	मंगल / सूर्य	शुभ · 45	सप्तमेश सक्रिय

व्यवसाय

अवधि	दशा	मूल्यांकन	यह अवधि क्यों
जून 2003 – अक्टू. 2005	शुक्र / बुध	शुभ · 46	महादशा : भाव-11 में ग्रह सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-2 के स्वामी ; महादशा : कारक शुक्र
जुल. 2007 – नव. 2007	सूर्य / मंगल	शुभ · 62	अन्तर्दशा : भाव-7 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय
अक्टू. 2008 – अग. 2009	सूर्य / गुरु	शुभ · 54	अन्तर्दशा : भाव-11 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-2 में ग्रह ; अन्तर्दशा : कारक गुरु
अग. 2009 – जुल. 2010	सूर्य / शनि	शुभ · 68	अन्तर्दशा : भाव-10 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 के स्वामी ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 में ग्रह
जुल. 2013 – फ़र. 2014	चन्द्र / मंगल	शुभ · 72	अन्तर्दशा : भाव-7 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय ; महादशा : सहायक भाव-3 के स्वामी
अग. 2015 – दिस. 2016	चन्द्र / गुरु	शुभ · 64	अन्तर्दशा : भाव-11 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-2 में ग्रह ; महादशा : सहायक भाव-3 के स्वामी
दिस. 2016 – जुल. 2018	चन्द्र / शनि	उत्तम · 78	अन्तर्दशा : भाव-10 के स्वामी सक्रिय ; महादशा : सहायक भाव-3 के स्वामी ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 के स्वामी
सित. 2022 – फ़र. 2023	मंगल / मंगल	उत्तम · 122	महादशा : भाव-7 के स्वामी सक्रिय ; अन्तर्दशा : भाव-7 के स्वामी सक्रिय ; महादशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय
फ़र. 2023 – मार्च 2024	मंगल / राहु	शुभ · 54	महादशा : भाव-7 के स्वामी सक्रिय ; महादशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय ; अन्तर्दशा : सहायक भाव-9 में ग्रह
मार्च 2024 – फ़र. 2025	मंगल / गुरु	उत्तम · 114	महादशा : भाव-7 के स्वामी सक्रिय ; महादशा : भाव-10 में ग्रह सक्रिय ; अन्तर्दशा : भाव-11 के स्वामी सक्रिय

14 दोष, रत्न एवं इष्ट देवता

इस खंड के विषय में: दोष वे दबाव-संरचनाएँ हैं जिन्हें शास्त्र संबंधों और कार्मिक भार के लिए विशेष मानते हैं; अधिकांश के परिहार भी होते हैं, अतः नीचे के निर्णय ध्यान से पढ़ें। रत्न अपने ग्रह को बल देते हैं, और आत्मकारक के नवांश से निकले इष्ट देवता वह व्यक्तिगत देवता हैं जिनकी उपासना आपकी आत्मा के पथ को सर्वाधिक सहज पोषण देती है।

कुज (मंगल) दोष	**अनुपस्थित** — मंगल मांगलिक दोष के भावों से बाहर है।
कालसर्प दोष	**अनुपस्थित** — सातों शास्त्रीय ग्रह राहु–केतु अक्ष के भीतर नहीं घिरे हैं।

रत्न परामर्श

भूमिका	ग्रह	रत्न
लग्नेश (प्रथम भाव के स्वामी)	शुक्र	**हीरा**

रत्न व्यक्तिगत परामर्श के बाद ही धारण करें — रत्न अपने ग्रह को बल देता है, चाहे वह ग्रह आपकी कुंडली में शुभ हो या अशुभ।

इष्ट देवता

कार्तिकेय / हनुमान जी

गणना के अनुसार चुना गया ग्रह **मंगल** है। **कार्तिकेय / हनुमान जी** मंगल ग्रह से जुड़े देवता हैं।

आत्मकारक सूर्य के कारकांश धनु से निर्धारित।

॥ शुभम् भवतु ॥

नक्षत्र आपका पथ आलोकित करें

यह रिपोर्ट आपके सटीक जन्म-विवरण से, स्विस एफ़ेमेरिस गणना और शास्त्रीय वैदिक सिद्धांतों के आधार पर तैयार की गई है। ज्योतिष मार्गदर्शन है, नियति नहीं — प्रत्येक योग का फल आपके पुरुषार्थ से आकार पाता है।

© 2026 FeelAstro · यह वैयक्तिक रिपोर्ट Ananya Sharma के लिए है ; इसका पुनरुत्पादन वर्जित है।